नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

संचार माध्यमों के सामने चरित्र निर्माण सबसे बड़ी चुनौति – प्रो. विजय धारूरकर

युवा, लोकतंत्र और मीडिया में वक्ताओं ने किया विमर्श। हिंदी विवि में राष्ट्रीय संगोष्ठी

वर्धा दि. 19 जनवरी 2016: राजनैतिक प्रबोधन, सामाजिक परिवर्तन और आर्थिक वृद्धि के साथ-साथ वर्तमान दौर संचार माध्यमों के सामने सबसे बड़ी चुनौति राष्ट्रीय चरित्र निर्माण की है। उक्त विचार डॉ. बाबासाहब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय के जनसंवाद विभाग के अध्यक्ष, प्रख्यात मीडियाविद प्रो. विजय धारूरकर ने व्यक्त किये। वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के जनसंचार विभाग की ओर से 'आध्यात्मिकता, मीडिया और सामाजिक बदलाव' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय मीडिया संगोष्ठी में युवा, लोकतंत्र और मीडिया' विषय पर आयोजित सत्र में बतौर मुख्य वक्ता बोल रहे थे। सत्र की अध्यक्षता मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ के संकाय अध्यक्ष प्रो. मनोज कुमार ने की।

मंगलवार को माधवराव सप्रे सभा मंडप में आयोजित प्रथम सत्र में वक्ता के रूप में संत गाडगेबाबा विश्वविद्यालय, अमरावती के अंतर्गत आने वाले शिवाजी कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय में जनसंचार विभाग के अध्यक्ष के डॉ. कुमार बोबड़े, मीडियाविद डॉ. अशोक मिश्र, मेरठ, विश्वविद्यालय के प्रदर्शनकारी कला फिल्म एवं नाट्य विभाग के अध्यक्ष प्रो. सुरेश शर्मा तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के सुधीर के रिंटेन उपस्थित थे।

प्रो. धारूरकर ने कहा कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता बड़ा महत्वपूर्ण अधिकार हमें संविधान से प्राप्त हुआ है। आज़ादी का मुख्य स्रोत संविधान ही है। उन्होंने युवा, लोकतंत्र और मीडिया विषय को व्याख्यायित करते हुए कहा कि आज़ादी के बाद दो बड़े परिवर्तन हुए, एक जयप्रकाश नारायण आंदोलन और एक अभी गैर-काँग्रेस की सरकार। जनतंत्र की ताकत सबसे बड़ी ताकत है और यही कारण है कि सन 1942, 1977 और 2014 के परिवर्तनों ने देश के लोकतंत्र में बड़े बदलाव लाए। इसमें युवा शक्ति की अहम भूमिका रही है। युवा शक्ति और मीडिया समाज को जगाता है तो बड़े परिवर्तनों का आगाज़ होता है। युवा और लोकतंत्र का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि देश में राजीव गांधी की सरकार ने 18 वर्ष के युवा-युवतियों को मताधिकार प्रदान किया। इससे युवाओ की निर्णय क्षमता बढ़ गयी। पूर्व

राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने भी युवा शक्ति में परिवर्तन की ताकत को भांप लिया था। युवाओं के साथ-साथ मीडिया की भी शक्ति लोकतंत्र की मजबूती का काम करती है। दोनों की राष्ट्र के चरित्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका है। कहा जाए तो देश के लिए एजेंडा सेटिंग रोल का दायित्व मीडिया पर है। अनेक उदाहरणों से यह पता चलता है कि युवा और मीडिया ने भारत के इतिहास में नया अध्याय लिख दिया है। चरित्र निर्माण के लिए पोलिटिकल स्कूलिंग की आवश्यकता पर उन्होंने बल दिया और इसके लिए उन्होंने महात्मा गांधी, जयप्रकाश नारायण, डॉ. आंबेडकर आदि नेताओं का उदाहरण दिया। उन्होंने युवा और मीडिया में आध्यात्मिक जागरण को आवश्यक बताया।

डॉ कुमार बोबड़े ने कहा कि मीडिया के माध्यम से समाज में जो प्रसारित होता है उससे लोकतंत्र को मजबूती नहीं मिल पा रही है। आज हमारे युवा को लोकतंत्र का सही मतलब नहीं पता है। राष्ट्रिय पर्वों और चुनाव के समय ही लोकतंत्र की बाते होती हैं। हमारे सामने प्रभावी न्यू मीडिया है परंतु हम उसका सही उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। उन्होंने कहा कि मीडिया साक्षरता बढ़ाना ज़रूरी है।

डॉ अशोक मिश्र ने कहा कि जो आज के युवा है वही आगे मीडिया के उपभोक्ता बनेंगे। मीडिया संस्थाओं मे इस बात पर चर्चा होनी चाहिए कि युवाओं को किस तरह की खबर दी जाय। लोकतंत्र के विषय में युवाओं को जागरूक करना ज़रूरी है। मीडिया को उन खबरों को प्रमुखता दी जानी चाहिए जो भटकाव की स्थिति को दूर करे। युवाओं को सही दिशा में ले जाने के लिए मीडिया का अपनी भूमिका समझनी होगी।

डॉ. सुधीर रिंगटिन का कहना था कि युवाओं को शिक्षित करने के बजाय उनको गलत सूचना दी जा रही है। अशिक्षित युवाओं को न्यू मीडिया नामक हथियार मिला जिसका दुरुपयोग भी हो रहा है। इसलिए मीडिया साक्षरता बहुत ज़रूरी है। न्यू मीडिया ने अन्ना आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। युवाओं को मीडिया में किस प्रकार से जुड़ना है ये तय करना होगा ।

प्रो. सुरेश शर्मा ने कहा कि देश में लगभग 37 करोड़ युवा है। ऐसे में अखबारों में मीडिया प्रशिक्षण पर चर्चा करना ज़रूरी है। उन्होंने युवा को शिक्षित और लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए मीडिया प्रशिक्षण और व्यावहारिक शिक्षा पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा कि काली खबरों का व्यापार तेज़ी से चल रहा है और मीडिया मुनाफे का उद्योग है ऐसे में कैसे इसको सामाजिक सरोकार से जोड़ा जाय इसपर चिंतन की आवश्यकता है।

अध्यक्षीय उदबोधन में विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्रोफेसर मनोज कुमार ने उक्त वक्ताओं को सरनसित कराते है कि वोट का अधिकार व्यक्ति कि गरिमा को स्थापित करता है। राष्ट्र को जीवित रखने के लिए प्रतीक आवश्यकता होता है। विचार जब जन्म लेता है तो उसमे इस्म कि स्थापना होती है संचार में स्पाररल ऑफ के सिद्धांत से ही संचार का विकास होता होता है। उन्होंने सवाल किया कि क्या मीडिया समाज का या समाज मीडिया का निर्माण कर रहा है, ये कौन तय करेगा। युवाओ की कोई उम्र नहीं होती, लेकिन आज के पारिदृश में संचार और युवा की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। कार्यक्रम का संचालन जनसंचार विभाग के सहायक प्रोफेसर संदीप वर्मा ने किया।